वर्ष-1, अंक-2, जनवरी - मार्च 2024 E-ISSN : 2584-2900

कृषि विकास का सांस्कृतिक पर्यावरण पर प्रभाव

[1]राजकुमार चौरसिया
शोधार्थी भूगोल
[2]महेश चन्द्र अहिरवार
सहायक प्राध्यापक (शोध निर्देशक)
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय छतरपुर (म0प्र0)

प्रस्तावना

कृषि स्वयं एक सांस्कृतिक क्रिया है। जो कि मानव द्वारा विविध भौगोलिक परिस्थितियों में विविध प्रकार से की जाती है। कृषि की आधुनिकता किसी भी क्षेत्र की संस्कृति में आधुनिकता का परिणाम होती है। दूसरे शब्दों में आधुनिक कृषि एवं सांस्कृतिक पर्यावरण दोनों घनिष्टत: अंतर्सम्बन्धित है। जहॉ एक ओर आधुनिक कृषि का सांस्कृतिक पर्यावरण पर प्रभाव दिखाई देता हे वहीं सांस्कृतिक पर्यावरण भी कृषि को प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से प्रभावित करता है। आधुनिक कृषि पद्धतियों एवं कृषि विकास के प्रभाव से आर्थिक सामाजिक सांस्कृतिक एवं राजनैतिक पक्षों में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं जो सांस्कृतिक पक्षों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होते है।

सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन एक गंत्यात्मक प्रक्रिया है। परिवर्तन के बिना प्रगति सम्भव नही है। परिवार, ग्राम, नगर, राज्य, राष्ट एवं विश्व में प्रत्येक सांस्कृतिक परिदृश्य परिवर्तनशील है। अध्ययन क्षेत्र में आधुनिक कृषि के प्रभाव स्पष्टत: मानव के भोजन एवं पोषण, वेशभूषा व रहन - सहन अधिवासों सामाजिक - आर्थिक क्रियाओं एवं राजनैतिक क्रियाओं पर देखे जा सकते है।

प्रस्तुत शोध पत्र में कृषि विकास का सांस्कृतिक पर्यावरण पर प्रभाव का अध्ययन में सागर संभाग के संदर्भ में किया गया है। पुरातन समय से ही भारत एक कृषि प्रधान देश रहा है। जिसमें यहॉ के लोगों का मुख्य व्यवसाय एवं आजीविका का साधन भी कृषि ही रहा है । परन्तु वर्तमान में कृषि के विकास में कई तरह के पर्यावरणीय विभिन्न समस्यायें उत्पन्न हो रही है जिनका अध्ययन प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से किया गया है। शोधार्थी का मुख्य उद्देश कृषि सांस्कृतिक पर्यावरण पर प्रभाव का आंकलन करना है।

भोजन एवं पोषण पर प्रभाव

भोजन मानव की अनिवार्य आवश्यकता है। इससे उसकों उर्जा प्राप्त होती है। भोजन की प्रकृति एवं स्वभाव स्थानीय उपलब्धता के अनुसार परिवर्तित होती रहती है। क्षेत्र एवं स्थानक के साथ भोजन की पोषकता में परिवर्तन होना आवश्यक है। यहॉ 60 प्रतिशत से 70 प्रतिशत लोग शाकाहारी हैं। समय के साथ यहॉ प्रोटीन युक्त भोजन जैसे मांस, मछली एवं अण्डों की ओर लोगों का रुझान बढ़ रहा है। अध्ययन क्षेत्र मे प्रयुक्त होने वाले भोज्य पदार्थों को सारणी में दर्शाया गया है।

वर्ष-1, अंक-2, जनवरी - मार्च 2024 E-ISSN : 2584-2900

सारणी

सागर संभाग में प्रयुक्त भोज्य पदार्थों के उपयोग में परिवर्तन

भोज्य पदार्थ	1951-52	1961-62	2001-02	2019-20
खाद्यान्न	कोदो, बसारा, चना, गेहूँ, मरईया	ज्वार, गेहूँ	गेहूँ, चावल, चना	गेहूँ, चावल
छाल	उड़द, मूँग, अरहर	उड़द, मूँग, अरहर	मूँग, अरहर	उड़द, मूँग, अधिकतम
सब्जियॉ	हरी, सब्जियों का नगण्य उपयोग	हरी, सब्जियों का न्यून उपयोग	हरी, सब्जियों का बढ़ता उपयोग	हरी, सब्जियों का नगर एवं गांव में अधिक उपयोग
मसाले	न्यूनतम उपयोग	मध्यम उपयोग	बढ़ता उपयोग	मध्यम उपयोग
दूध घी	भोजन का आवश्यक अंग दूध-घी का उपयोग	दुध-घी का उपयोग	अधिक उपयोग विभिन्न भोज्य के रूप में	अधिक उपयोग विभिन्न कार्यक्रमों समारोह व्यवसायों
टचार	अधिक उपयोग	अधिक उपयोग	अधिक उपयोग	अधिक उपयोग में वृद्धि
खाद्य प्रवृत्ति	नि: स्वाद साधारण	साधारण	मध्यम चटपटा एवं नमकीन	स्वाद प्रधान चटपटा एवं नमकीन
मॉस मछली एवं अण्डे	न्यूनतम उपयोग	मध्यम उपयोग	बढ़ता उपयोग	अण्डे, मॉस एवं मछली का बढ़ता उपयोग
मिठाई गुड़ शक्कर	अधिक उपयोग	घटता उपयोग	मध्यम उपयोग	न्यूनतम एवं घटता उपयोग
फल	न्यूनतम उपयोग	मध्यम उपयोग	बढ़ता उपयोग	अधिकतम उपयोग

स्त्रोत: व्यक्तिगत प्रेक्षण एवं सर्वेक्षण

सारणी से स्पष्ट है कि यहॉ भोज्य पदार्थ में समय के साथ अत्याधिक परिवर्तन हुए हैं। अध्ययन क्षेत्र में गेहूँ, सब्जी, फल मसाले तेल एवं तेल से बने पदार्थो जैसे मॉस मछली एवं अण्डों का उपयोग बढ़ रहा है। जबकि दालों, दूध, घी, अचार एवं मीठे पदार्थों के उपयोग में भी वृद्धि आई है। भोजन में चटपटे स्वादिष्ट एवं नमकीन भोज्य पदार्थों में वृद्धि हो रही है। यहॉ पर पेय पदार्थो के उपयोग की प्रवृत्ति में भी निरंतर वृद्धि हुई है। परिवर्तित भोज्य पदार्थो की अधिकता जिला मुख्यालयों एवं तहसील मुख्यालयों के आस पास अधिक एवं दूरस्थ क्षेत्रों में कमी पाई जाती है।

अध्ययन क्षेत्र में आधुनिक कृषि के प्रभाव से पोषक तत्वों में वृद्धि हुई है। सागर संभाग में जहॉ एक ओर मानव की क्रियाशक्ति बढ़ी है, वहीं दूसरी ओर परिवहन के साधनों में वृद्धि के कारण यहॉ का मानव

वर्ष-1, अंक-2, जनवरी - मार्च 2024 E-ISSN : 2584-2900

बाहरी क्षेत्रों से भी फल एवं अन्य पदार्थो का क्रय कर लेता है। ये भोज्य पदार्थ न्यूनाधिक मात्रा में अध्ययन क्षेत्र के प्रायः सभी ग्रामों तक पहुंच जाते है। जिसमें क्षेत्रीय भोजन के पोषण तत्वों में वृद्धि हुई है। जिसे निम्नलिखित सारणी में दर्शाया गया है।

सारणी

सागर संभाग में प्रति व्यक्ति दैनिक पोषक तत्वों में वृद्धि

पोषक तत्व	1951-52	1961-62	2001-02	2019-20
कार्बोहाईडेट्स (ग्राम में)	320	310	307	350
प्रोटीन(ग्राम में)	80	82	86	100
वसा (ग्राम में)	74	78	79	95
खनिज लवण (ग्राम में)	30	35	38	60
विटामिन्स (ग्राम में)	125	130	132	150
कैलोरीज (संख्या में)	2300	2450	2600	3500

स्त्रोत्: व्यक्तिगत प्रेक्षण एवं सर्वेक्षण

आधुनिक कृषि ने विविध उपलब्धियों के साथ ही कुछ चुनौतियों एवं विसंगतियों को भी जन्म दिया है। सबसे कष्टदायक बात यह है कि आज अधिकतर खाद्य-पदार्थ जिसमें खाद्यान्न दलहन, तिलहन एवं सब्जियाँ सम्मिलित है। वह कीटनाशकों से प्रदूषित है जो कि सीधे आधुनिक कृषि नवाचारों की देन है। यह मानव एवं पशुओं के उर्जा तंत्र और स्नायु तंत्र को दुष्प्रभावित कर रहे हैं। जिसके कारण मानव शरीर की सूक्ष्म ढांचागत एकता बिखर रही है तथा भोजन श्रृंखला विषाक्त होती जा रही है। पशुओं को खिलाए जाने वाला चारा भी विषाक्त हो रहा है। जिसमे पशुओं से प्राप्त होने वाला दूध विषाक्त होने से नहीं बच पा रहा है। इस विषाक्तता के कारण मनुष्य का विविध रोग ब्याधियों का सामना करना पड़ रहा है।

वेशभूषा एवं रहन-सहन पर प्रभाव

वेशभूषा मानवीय स्वभाव रूचि एवं आर्थिक सम्पन्नता पर निर्भर करती है। जबकि रहन-सहन का स्तर क्षेत्रीय विकास का प्रतिविम्ब है। अध्ययन क्षेत्र में आधुनिक कृषि का वेशभूषा एवं रहन-सहन पर प्रभाव स्पष्टतः दृष्टिगोचर हो रहा है। यहॉ पर कृषि आधुनिकीकरण के साथ–साथ नगरों एवं ग्रामों की जनसंख्या की वेशभूषा में समय के साथ परिवर्तन दिखाई दे रहा है। संभाग के ग्रामीण क्षेत्रों में कृषक धोती, कुर्ता, कमीज कुर्ता पजामा पहनते हैं। ये लोग सिर पर साफी बॉधते हैं। विद्यार्थी एवं शिक्षित व्यक्ति अधिकांशतः पेंट शर्ट पहनते हैं। इनमे टी–शर्ट, शोर्ट जींस, पेंट एवं सूती कपड़ों की ओर निरंतर रुझान बढ़ रहा है। जो आधुनिक कृषि के कारण सम्पन्नता का प्रतीक है।

वर्ष-1, अंक-2, जनवरी - मार्च 2024 E-ISSN : 2584-2900

सारणी

सागर संभाग में वेशभूषा में परिवर्तन

वर्ग	1951-52	1961-62	2001-02	2019-20
बालक	सूती जांगिया, कुर्ता झबला, पायजामा नंगे पैर, नेक्कर	टेरीकॉट सूती निक्कर, हॉफ पेन्ट शर्ट पैरों में चप्पल	टेरीकॉट उॅनी चमकीलि फैन्सी पेन्ट शर्ट रेडीमेड कपड़े सैंडिल	सूती रेडीमेड कपड़ों की अधिकता पेन्ट जीन्स, शर्ट, टीशर्ट सैंडिल एवं जूते चप्पल
बलिका	सूती फ्रांक, झवला	फ्रांक, सलवार कुर्ता चप्पल	फ्रांक, सलवार कुर्ता पेन्ट शर्ट, स्कर्ट जूती, टॉप	फ्रांक, सलवार कुर्ता सरारा, पेन्ट शर्ट शोर्ट टीशार्ट, जीन्स स्कर्ट, सैंडिल
युवा पुरूष	पेन्ट, शर्ट, पयजामा कुर्ता, कमीज, धोती तोलिया, साफी चमड़े के जूते	लुंगी, बनियान पयजामा, पेन्ट, शर्ट सफारी सूट, बड़े बड़े बाल, कपड़े चमड़े व प्लास्टिक के जूते, मूँछ रखना	पेन्ट, शर्ट, कुर्ता पयजामा, सूट स्वेटर, जर्सी गुलेबन्द, टाई, टोपी तोलिया, रूमाल चश्मा	जीन्स, पेन्ट, शर्ट टीशर्ट, कुर्ता पयजामा, रूमाल तोलिया, रेडीमेड सूती वस्त्र, चश्मा चमड़े एवं रेग्जीन के जूते
युवा एवं वृद्ध स्त्रियॉ	साड़ी, पेटीकोट ब्लाउज, चॉदी सोने के आभूषणों की अधिकता, लम्बे बाल एवं नाइलोन चप्पल	फैन्सी साड़ियॉ ब्लाउल, पेटीकोट चॉदी एवं सोने के आभूषण, चमड़े के सेंडिल	टेरीकोट की साड़िया, सूती पेटीकोट, ब्लाउज फैन्सी वस्त्र एवं आभूषणों का प्रयोग	फैन्सी साड़िया, ब्रा मैक्सी, नाइटी, सूती पेटीकोट, कोट पेन्ट शर्ट, फैन्सी वस्त्रों का अधिक एवं आभूषणों का कम प्रयोग, जूती, जूता ऊँची हील सेंडिल
वृद्ध पुरूष	कुर्ता, पयजामा धोती साफा, अंगोछा जूती, मूँछ रखना एवं बाल कटवाना	कुर्ता, धोती, साफा कमीज, नेहरू कोट मूँछ रखना, सिर के बाल साफ रखना प्लास्टिक के जूते एवं जूती	फैन्सी धोती, कुर्ता नेहरू कट कोट कमीज, साफी–साफा प्लास्टिक व चमड़े के जूते	फैन्सी कुर्ता, सूती धोती, पेन्ट कोट कमीज, पयजामा नेहरू कट कोट कमीज, साफी हल्की मूँछ, बाल साफ, प्लास्टिक रबड़ एवं कपड़े के जूते

स्त्रोत: व्यक्तिगत प्रेक्षण एवं सर्वेक्षण

वर्ष-1, अंक-2, जनवरी - मार्च 2024 E-ISSN : 2584-2900

अधिवासों पर प्रभाव

अधिवासों प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक पर्यावरण द्वारा निर्धारित और नियंत्रित होते है। भौतिक पर्यावरण के अंतर्गत जो तत्व अधिवासों के वितरण को प्रभावित करते है। उनमें धरातलीय स्वरूप स्थानीय निर्माण सामग्री जल प्रवाह उर्वर मिटट्री, जल स्त्रोत् की सुविधा एवं वर्षा उल्लेखनीय है। सांस्कृतिक पर्यावरण के अंतर्गत मानव का आर्थिक स्तर सामाजिक एवं धार्मिक मान्यताएँ धर्म जाति एवं राजनीतिक पक्ष महत्वपूर्ण हैं।

अध्ययन क्षेत्र में आधुनिक कृषि के परिणाम स्वरूप यहाँ अधिवासों की संरचना में महत्वपूर्ण परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहे हैं। आधुनिक कृषि क्रियाओं से यहाँ के कृषकों की कृषि आय बढ़ी है तथा उनके आर्थिक स्तर में भी सुधार हुआ हैं। जिससे यहॉ के ग्रामीण एवं नगरीय अधिवासों में अत्याधिक परिवर्तन हुए है। जहॉ एक ओर पक्के मकानों की वृद्धि एवं कच्चे मकानों में ह्रास हुआ है। वहीं दूसरी ओर दस्सु उन्मूलन से यहॉ के सघन अधिवास प्रकीर्ण अधिवासों में परिवर्तित हो रहे है।

संभाग के अधिवासों का अध्ययन करने से स्पष्ट है कि यहाँ औसत रूप से 88.26 प्रतिशत अधिवास पक्के हैं इन अधिवासों की संरचना में भी परिवर्तन हुआ है। वर्तमान में नवनिर्मित अधिवासों में अतिथि गृह, पशु गृह, शयनकक्ष, भण्डार गृह, रसोई स्नानागार अलग–अलग व्यवस्थित रूप से बनाए गए हैं। जिससे एक ओर धन का अपव्यय और दूसरी कृषि योग्य भूमि के क्षेत्रफल में कमी हुई है क्योंकि वर्तमान अधिवास अधिक एवं खुले क्षेत्र में निर्मित हो रहे हैं।

सागर संभाग के प्रतिदर्श सर्वेक्षण से यह भी ज्ञात हुआ है कि यहाँ के कृषको में अपने खेतों पर अधिवास बनाने का रुझान बढ़ रहा है। अध्ययन क्षेत्र के निवासी समूह में न रह कर एकाकी रहने में अधिक अभिरुचि रखते हैं। इससे कृषि भूमि का क्षेत्र अधिवासों के अंतर्गत आने से कृषि के लिए अप्राप्य क्षेत्र का प्रतिशत बढ़ रहा है। कृषि भूमि पर बढ़ते अधिवासों से भविष्य में कृषि भूमि के कम होने के संकेत हैं।

राजनैतिक क्रियाओं पर प्रभाव

आधुनिक कृषि का राजनैतिक क्रियाओं पर प्रभाव विशेष रूप से पड़ता है। क्योंकि राजनैतिक क्रियाओं एवं कृषि एक दूसरे से संबंधित है। भारत कृषि प्रधान देश होने के कारण यहॉ आधुनिक कृषि जहॉ एक ओर राजनैतिक क्रियाओं द्वारा प्रभावित होती है। वही दूसरी ओर आधुनिक क्रियाओं पर स्पष्टत: पड़ता है।

अध्ययन क्षेत्र में कृषि आधुनिकता का प्राप्त कर चुकी है जिससे कृषक जागरूकता में वृद्धि होने से कृषको की राजनीति में सहभागिता निरंतर बढ़ रही है। यहाँ के कृषक कृषि से संबंधित विविध समस्याओं के लेकर धरना प्रदर्शन, चक्काजाम, कृषक सम्मेलन, कृषक आंदोलन, घेराव आदि के माध्यम से शासन को अवगत कराते है। कृषक संगठन गठित कर प्रशासन पर अपना दबाव बनाते हैं। अध्ययन क्षेत्र में यदि प्राकृतिक प्रकोप से कृषि फसल को हानि होती है तो कृषक उस हानि की भरपाई करने के लिए शासन से माँग करते हैं।

वर्ष-1, अंक-2, जनवरी - मार्च 2024 E-ISSN : 2584-2900

शासन की जो नीतियॉ कृषकों को ध्यान में रख कर बनाई जाती है उनसे कृषको को लाभ भी प्राप्त होता है। फलस्वरूप उसी सरकार को पुनः चुनने की पहल करते हैं एवं सरकार भी बनती है। यदि शासन की नीतियॉ कृषक विरोधी बनाई जाती है। तो कृषक उनका विरोध करने के साथ साथ चुनाव के दौरान सरकार को हराने के निर्णय लेते हैं। फलत: वर्तमान कृषक स्वयं निर्णय लेने में सक्षम है।

आधुनिक समय में कृषको की सक्रियता विभिन्न राजनैतिक पदाधिकारी की ओर निरंतर बढ़ रही है। इन पदाधिकारियों में पंच, सरपंच, जनपद सदस्य, जनपद अध्यक्ष, उपाध्यक्ष सचिव एवं सहसचिव विधायक, सांसद एवं जिला पंचायत अध्यक्ष का चुनाव लड़ने की ओर कृषकों का रुझान बढ़ रहा है तथा राजनैतिक पदाधिकारी बनने की प्रतिस्पर्धा निरंतर बढ़ रही है जो आधुनिक कृषि को स्पष्टत: प्रभाव की ओर इंगित करती है। इससे स्पष्ट है कि सांस्कृतिक पर्यावरण विविध पक्ष भी आधुनिक कृषि द्वारा अधिकांशत: सकारात्मक रूप से प्रभावित हुए हैं।

संदर्भ

1. नेगी बी.एस.: कृषि भूगोल, केदारनाथ रामनाथ, मेरठ 1994-95
2. शर्मा बी. एल.: कृषि भूगोल, साहित्य भवन, आगरा, 1988, पृ.296
3. सिंह ब्रजभूषण: कृषि भूगोल, ज्ञानोदय प्रकाशन, गोरखपुर 1996
4. सिंह नरेन्द्र : बुन्देलखण्ड प्रदेश में सांस्कृतिक पर्यावरण का कृषि पर प्रभाव अप्रकाशित पीएच.डी. शोध प्रंबध अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा (म.प्र.), 2004
5. ससोदिया रामवीर सिंह : आधुनिक कृषि का पर्यावरण पर प्रभाव, जिला भिण्ड म.प्र., 2008 अप्रकाशित पी. एच. डी. शोध प्रबंध, जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर (म.प्र.)
6. कमलेश एस. आर. : कृषि भूगोल, विलासपुर संभाग में कृषि विकास का स्तर वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर, 1996
7. कोली हरिनारायण : पर्यावरण एवं मानव, संसांधन पोईन्टर पब्लिसर्स जयपुर, (राजस्थान), 1996